एक पागल की डायरी

लू सुन की चुनिंदा कहानियाँ

अनुवाद:

बद्री नारायण राव

एक पागल की डायरी

लू सुन की चुनिंदा कहानियाँ

अनुवाद:

बद्री नारायण राव

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: जून, 2022

© बद्री नारायण राव

परिचय

लू सुन (1881 -1936) - चीन की आधुनिक सांस्कृतिक क्रांति के अग्रदूत - न केवल एक महान चिंतक और राजनीतिक समालोचक थे वरन आधुनिक चीनी साहित्य के संस्थापक भी थे। लू सुन की सर्वोत्कृष्ट कहानियों में गिनी जाने वाली ‘एक पागल की डायरी’ कहानी ‘न्यू यूथ’ पत्रिका के मई 1918 अंक में प्रकाशित हुई थी। यह कहानी आधुनिक चीनी साहित्य के इतिहास की प्रथम लघु कथा है और इसके माध्यम से लू सुन द्वारा चीन के सामंती समाज के विरुद्ध युद्ध की घोषणा भी। इसके बाद ‘आह क्यू की सच्ची कहानी’ एवं ‘नव वर्ष का बलिदान’ जैसी कहानियों का प्रकाशन हुआ जो जर्जर चीनी समाज के नंगे यथार्थ पर चोट करने में कामयाब हुईं।

अपने प्रारंभिक जीवन में लू सुन एक लोकतांत्रिक क्रान्तिकारी थे जो बाद में चलकर एक साम्यवादी में मुखरित हुआ। उनकी आरम्भिक रचनाएँ मुख्यतः कहानियां ही थीं। ये कहानियां रचनात्मक लेखन के दौर में उनकी लेखन शैली को दर्शाती हैं जो पूर्णरूपेण सूक्ष्म यथार्थवादी एवं साम्राज्यवाद/सामंतवाद विरोधी है।

अनुक्रमाणिका

एक पागल की डायरी	10
कुंग इ-ची	30
दवाई	40
आने वाला कल	56
एक घटना	69
चाय के प्याले में तूफ़ान	73
मेरा पुराना घर	89
आह-क्यू की सच्ची कहानी	107
गांव का ओपेरा	190

आमुख

युवावस्था में मैं भी स्वप्नदर्शी था। बहुत सारे सपने भूल गये परन्तु इसका मुझे कोई अफ़सोस नहीं है। क्योंकि यद्यपि भूतकाल को याद करके आप प्रसन्न हो सकते हैं - ये आपको कभी- कभी एकाकी भी बना देते हैं- फिर भी बीते दिनों से चिपके रहने का कोई औचित्य नहीं है। हालाँकि मेरी समस्या यह है कि मैं पूर्णतया भूल नहीं पाता और ये कहानियां उन्हीं स्मृतियों का परिणाम हैं।

मैं चार वर्षों तक एक गिरवी एवं एक दवा की दुकान पर जाता रहा हूँ। मुझे याद नहीं मैं उस समय कितने वर्षों का था लेकिन दवा की दुकान का काउंटर उस समय मेरी ही ऊंचाई का था और गिरवी वाला मुझसे दोगुनी ऊंचाई का। मैं गिरवी की दुकान पर आभूषण एवं कपड़े देकर घृणा सहित पैसे लेता और अपने बीमार पिता के लिए दवा की दुकान से दवाएँ खरीदता। घर वापसी में मेरा दिमाग कई अन्य बातों में व्यस्त रहता क्यों कि दवा लिखने वाला डाक्टर बहुत प्रसिद्ध था और कई असामान्य दवाएँ लिखता जिन्हें ढूँढ पाना कठिन कार्य था। फिर भी मेरे पिता की बीमारी उनके मरने तक बद से बदतर होती गयी।

मेरा विश्वास है कि जो लोग संपन्नता से विपन्नता का सफर तय करते हैं वे ही जानते हैं कि दुनिया की असलियत क्या है। मैं अपना स्कूल बदलना चाहता था जिससे कि चेहरों और दृश्यों में कुछ परिवर्तन महसूस हो सके। इसके लिए मेरी माँ को मार्ग

व्यय हेतु आठ डालर की व्यवस्था करनी थी। इस पर मेरी मां का रोना स्वाभाविक ही था क्योंकि उस समय शास्त्रीय विषयों का अध्ययन कर परीक्षा पास करने का ही चलन था और विदेशी विषयों के अध्ययन को हेय दृष्टि से देखा जाता था। इसके अतिरिक्त माँ मुझसे अलग हो जाने को लेकर भी दुखी थी।

इन सबके बावजूद मैं पढ़ने के लिए बाहर चला गया और वहीं पर मैंने प्राकृतिक विज्ञान, गणित, भूगोल, इतिहास, चित्रांकन एवं शारीरिक प्रशिक्षण आदि विषयों का नाम पहली बार सुना। वहां शरीर विज्ञान विषय नहीं था लेकिन मानव शरीर, रसायन शास्त्र तथा स्वच्छता से सम्बंधित विषयों की पुस्तकें थीं। अपनी जानकारी के चिकित्सकों से बातचीत और उनके प्रिस्क्रिप्शन को पढ़ कर और अपनी ताज़ा जानकारी से उनकी तुलना करने पर मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि वे चिकित्सक या तो ना-समझ थे या जानबूझकर नीमहकीम बने थे। उनके द्वारा पीड़ित मरीज़ों एवं उनके परिवार के प्रति मेरे अंदर सहानुभूति जागृत हुई । मैंने यह भी देखा कि जापान में शुरू हुए सुधार बहुत कुछ पश्चिमी चिकित्सा विज्ञान के अध्ययन से उत्पन्न हुए।

इन्हीं संकेतों ने मुझे जापान के एक क्षेत्रीय मेडिकल कॉलेज पहुंचा दिया। मैं खूबसूरत सपने देखने लगा कि चीन वापस जा कर मैं अपने पिता की तरह बीमार मरीज़ों - जिनका सही इलाज नहीं किया गया है - का इलाज करूँगा। और यदि युद्ध छिड़ गया तो मैं सेना के डाक्टर के रूप में अपनी सेवाएं देकर सुधार में अपने देशवासियों के विश्वास को मजबूत करूँगा।

लेकिन इसी बीच एक फिल्म - जिसमें एक चीनी जासूस का अपमान दर्शाया गया था - देखकर मैंने पढ़ाई बीच में ही छोड़ दी और टोक्यो आ गया क्योंकि मुझे लगा की चिकित्सा की पढ़ाई बहुत अधिक महत्वपूर्ण नहीं है। एक कमजोर और पिछड़े देश के लोग अवमानना भोगने के लिए बाध्य हैं। ऐसे में सबसे महत्वपूर्ण बात है उनकी आतंरिक शक्ति को बदलने की और मुझे लगा कि इसके लिए साहित्य ही सर्वोत्कृष्ट साधन है। इसलिए मैंने एक साहित्यिक आंदोलन चलाने का निश्चय किया। उस समय टोक्यो में बहुत से चीनी छात्र विधि, राजनीति शास्त्र, भौतिकी, रसायन एवं यांत्रिकी की पढ़ाई कर रहे थे परन्तु कोई भी साहित्य या कला का विद्यार्थी नहीं था। फिर भी इसी में मैंने कुछ सुहृदय आत्माओं को ढूँढ़ निकाला और हमने मिलकर एक पत्रिका निकालने की ठानी। इस पत्रिका का नाम हमने "नव जीवन" रखा।

जब पत्रिका छपने का समय समीप आया तभी हमारे कुछ साथियों ने हमारा साथ छोड़ दिया और अंततः हम केवल तीन बचे और वे भी वित्त-विहीन। चूँकि हमने पत्रिका एक अपशकुनी समय पर शुरू किया था इसलिए हम अपनी असफलता के किसी को दोषी नहीं ठहरा सकते थे। बाद में हम तीन भी अलग हो गए और हमारे भविष्य के सपने भी टूट गए। इस तरह "नव जीवन" का जन्म से पहले ही अंत हो गया।

इस घटना ने मुझे अकेला कर दिया। मेरा अकेलापन दिन पर दिन बढ़ता ही गया और एक जहरीले सांप की तरह कुंडली बांध कर मेरी आत्मा से लिपट गया। तथापि मेरी असहनीय उदासी के बावजूद मैं दुखी नहीं था क्योंकि इस अनुभव ने मुझे यह

सीख दे दी थी की मैं कोई सुपर हीरो नहीं था। फिर भी इससे उबरने के लिए मैंने समय के साथ समझौता कर लिया लेकिन इससे मेरी युवावस्था का उत्साह एवं जोश ख़त्म हो गया।

जिस होस्टल में मैं रहता था उसमें तीन कमरे थे और कहा जाता था कि उसमें रहने वाली औरत ने अहाते में स्थित एक पेड़ से लटक कर अपनी जान दे दी थी । इस मकान में मैं कुछ वर्षों तक रहा और प्राचीन अभिलेखों की प्रतिलिपियाँ बनाता रहा। मेरे यहाँ बहुत कम आगंतुक थे, कोई राजनीतिक समस्या नहीं थी और मेरी इच्छा भी यूँ ही समय काटने की थी। गर्मी की रातों में जब मच्छर बहुतायत में होते थे मैं पेड़ के नीचे बैठ कर पंखा झलते हुए पत्तों के बीच से आसमान की और देखता रहता और पेड़ पर से इल्लियां मेरे कन्धों पर गिरती रहती थीं।

कभी-कभार बात चीत के लिए आने वाला एकमात्र आगंतुक मेरा मित्र चिन सिन-यी था। वह अपना बैग टूटे मेज़ पर रखकर और अपना गाउन उतार कर मेरे सामने बैठ जाता। वह ऐसे हांफता था जैसे उसे कुत्तों ने दौड़ाया हो।

"इनकी प्रतिलिपि बनाने की क्या उपयोगिता है?" एक रात उसने प्रतिलिपियों को देखते हुए पूछा।

"कुछ भी नहीं"

"फिर क्यों कर रहे हो?"

"बिना किसी विशेष कारण के।"

“मुझे लगता है कि तुम कुछ लिख सकते हो……”

मैं समझ गया। वे “नव युवा” पत्रिका का संपादन कर रहे थे और उस पर कोई सकारात्मक प्रतिक्रिया नहीं आ रही थी इसलिए मुझे लगा कि वे एकाकी महसूस कर रहे थे। फिर भी मैंने कहा:

“कल्पना करो लोहे के एक ऐसे अटूट घर की जिसमें कोई खिड़की नहीं है और उस घर में गहरी निद्रा में ढेर सारे लोग पड़े हैं जिनकी घुटन से मौत हो जाने वाली है। आपको पता है कि चूँकि वे नींद में मर जायेंगे इसलिए मृत्यु की पीड़ा को महसूस नहीं कर पायेंगे। ऐसी अवस्था में यदि आप चिल्ला कर कुछ कम गहरी निद्रा वाले अभागों को अटल मृत्यु की पीड़ा का बोध करने के लिए जगा देते हैं तो क्या समझते हैं आप उनका कुछ भला कर रहे हैं?”.

“लेकिन यदि कुछ लोग जाग जाते हैं तो आप कह नहीं सकते कि इस लौह- घर को तोड़ने की कोई उम्मीद नहीं है।”

सच, मेरे अपने दृढ़ विश्वास के बावजूद मैं उम्मीद को ख़त्म नहीं कर सकता क्योंकि यह भविष्य की चीज है। मैं अपने उदाहरण के आधार पर उसकी उम्मीद के प्रति विश्वास का खंडन नहीं कर सकता था। मैं लिखने को तैयार हो गया और उसका प्रति-फल मेरी पहली कहानी “एक पागल की डायरी” रही। उसके बाद से मैंने लिखना बंद नहीं किया और मित्रों के अनुरोध पर समय समय पर लघु कथाएं लिखता रहा और एक दर्जन से भी अधिक कहानियां लिख डाली।

जहाँ तक मेरा प्रश्न है मेरे अंदर खुद को अभिव्यक्त करने की कोई उत्कंठा नहीं थी - शायद इसलिए कि मैं अपने अतीत के एकाकीपन के दुःख को भूल नहीं पाया था। जो एकाकीपन से जूझ रहे थे, मैं कई बार उनको ललकारता ताकि उनका हौसला बुलंद रहे। मेरा रुदन मजबूत है या उदास, घृणास्पद है या हास्यास्पद मुझे फर्क नहीं पड़ता। परन्तु चूँकि यह शास्त्रों का आह्वान था इसलिए मुझे अपने सेना नायक के आदेशों का पालन करना था। यही कारण है कि मैं अपनी कहानियों में वक्रोक्तियों का सहारा लेता रहा हूँ। उस समय मेरे मुखिया निराशावाद के खिलाफ थे और मैं अपनी युवावस्था में मिले कटु एकाकीपन के विषाणु इन नए स्वप्नदर्शी युवाओं में नहीं भरना चाहता था।

स्पष्टतः मेरी लघु कथाएं कोई कलाकृतियां नहीं हैं। मैं अपने को भाग्यशाली समझता हूँ कि ये अभी भी कहानियों के रूप में जानी जाती हैं एवं एक पुस्तक के रूप में इनका संकलन हो रहा है। यद्यपि मैं इस सौभाग्य पर विचलित हूँ, फिर भी मुझे प्रसन्नता है कि इनका एक पाठक वर्ग है।

दिसम्बर 3, 1922,

पेकिंग